ग्रन्थमाला ‘बालसंस्कार’ : खण्ड ७

टीवी, मोबाइल एवं इंटरनेट के दुष्परिणामोंसे बच्चोंको बचाएं !

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदा	पढें, आचरणमें लाएं और आदर्श अभिभावक बनें !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. सम्मोहन-उपचार विशेषज्ञके रूपमें मुंबई में व्यवसाय (वर्ष १९७८ से १९९५)

२. अध्यात्मके प्रसार हेतु 'सनातन संस्था' की स्थापना

३. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) [टिप्पणी] स्थापनाकी उद्घोषणा एवं कार्यारम्भ (वर्ष १९९८)

(टिप्पणी : हिन्दू राष्ट्र [ईश्वरीय राज्य] - 'हीनान् गुणान् दूषयति इति हिन्दुः ।' अर्थात जो 'कनिष्ठ, हीन, रज एवं तम गुणोंका नाश करता है वह हिन्दू है ।' ऐसे सात्त्विक लोगोंका राष्ट्र अर्थात 'हिन्दू राष्ट्र' ।)

४. गुरुकुलसमान 'सनातन आश्रमों'की निर्मिति !

५. ईश्वरप्राप्ति हेतु, तथा राष्ट्र एवं धर्म कार्य हेतु तन-मन-धन का त्याग करनेवाले सहस्रों साधक निर्माण करना

६. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : २०.३.२०२४ तक गुरुकृपायोगानुसार साधना कर १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५६ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

७. देवता, साधना, आचारपालन आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-रचना एवं ग्रन्थ-प्रकाशन : मार्च २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९५ लाख ९६ सहस्र प्रतियां प्रकाशित एवं ५,००० से अधिक ग्रन्थ होंगे इतना लेखन प्रकाशनकी प्रतीक्षामें !

८. साधना एवं हिन्दू धर्म सम्बन्धी मार्गदर्शन करनेवाली ऑडियो सीडी एवं वीडियो सीडी की निर्मिति

९. शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतिसम्बन्धी शोध

१०. अपनी देह (नख, केश एवं त्वचा) तथा उपयोगकी वस्तुओंमें तथा वास्तुमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य एवं अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

११. कलाका सात्त्विक प्रस्तुतीकरण होने हेतु शोध

१२. २०.३.२०२४ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २२७ और अन्य ९१८ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषय में शोध-कार्य भी जारी है ।

१३. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

१४. ज्योतिषशास्त्र तथा नाडीभविष्य द्वारा विविधांगी शोध-कार्य

१६. 'सनातन प्रभात'के माध्यमसे पत्रकारिताका कार्य

१७. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ, देशभक्त एवं सामाजिक कार्यकर्ताओंका संगठन एवं आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन

१८. भीषण आपातकालका विचार द्रष्टापनसे अनेक वर्ष पहले ही कर आपातकालमें प्राणरक्षा हेतु आवश्यक विविध समाधान-योजनाओंके विषयमें ग्रन्थ, नियतकालिक, जालस्थल आदि माध्यमोंद्वारा मार्गदर्शन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु - 'www.Sanatan.org')

डॉ. जयंत आठवलेजीकी ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

‘१३.७.२०२२ से ‘सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका’के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको ‘सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले’ सम्बोधित किया जा रहा है। सप्तर्षियोंकी इस आज्ञाका उद्देश्य है कि ‘सच्चिदानंद परब्रह्म’ उपाधिके सम्बोधनसे ‘परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीमें विद्यमान ईश्वरीय तत्त्वका सभीको लाभ हो।’ (१३.७.२०२२ से पहले सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीको सनातनके ग्रन्थोंमें ‘प.पू. [परम पूज्य]’ एवं ‘परात्पर गुरु’ की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है।) इन उपाधियोंके अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ के मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें आवश्यक स्थानोंपर वैसा उल्लेख किया है।’ – **(पू.) श्री. संदीप आळशी, सनातनके ग्रन्थोंके संकलनकर्ता (२४.७.२०२२)**

भूमिका

'सनातनकी 'बालसंस्कार' ग्रन्थमालाका ग्रन्थ 'टीवी, मोबाइल और इंटरनेट से होनेवाली हानिसे बचें और लाभ उठाएं !' बच्चोंकी भांति अभिभावकों और शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है । ऐसेमें 'अलगसे यह लघुग्रन्थ क्यों प्रकाशित किया गया ?' यह प्रश्न कुछ लोगोंके मनमें उठ सकता है । प्रस्तुत लघुग्रन्थ प्रकाशित करनेके उद्देश्य निम्नांकित हैं ।

१. हिन्दू संस्कृतिकी शिक्षा है कि 'अभिभावक और शिक्षक, बच्चोंके प्रथम गुरु हैं ।' जीजामाता और दादोजी कोंडदेव ने बालक शिवाजीपर बचपनमें अच्छे संस्कार किए थे; इसलिए वे केवल पन्द्रह वर्षकी आयुमें 'एक स्त्रीपर बलात्कारके अपराधमें रांझा गांवके मुखियाको हाथ-पैर काटनेका दण्ड दे सके ।' आगे चलकर इन्हीं शिवाजीने रामराज्यसमान आदर्श 'हिन्दवी स्वराज्य'की स्थापना की थी । इस ग्रन्थका मुख्य उद्देश्य यही है कि आजके अभिभावकों और शिक्षकों को भी प्रकर्षकतासे लगे कि 'भावी पीढीको चरित्रवान, राष्ट्रभक्त

और धर्मप्रेमी बनाना', हमारा नैतिक और राष्ट्रीय दायित्व है ।'

२. बच्चे अनुकरणप्रिय होते हैं । उन्हें संस्कारोंका केवल उपदेश करनेसे काम नहीं बनता; अपितु इसके लिए अभिभावकों का संस्कारयुक्त आचरण भी आवश्यक है । अभिभावकोंके आचरणसे बच्चोंपर अनायास ही संस्कार होते हैं । इस दृष्टि से 'अभिभावकोंका आचरण कैसा हो और कैसा न हो', यह इस लघुग्रन्थमें बताया गया है ।

३. आजकल दूरदर्शन, मोबाइल और इंटरनेट जैसे प्रसारमाध्यमोंका झुकाव रज-तम प्रधान, असंस्कृत, विकृत, अश्लील संवाद और दृश्य की ओर है । इससे हिन्दू धर्म और संस्कृति की व्यापक हानि हो रही है । हिन्दू समाजको धार्मिक शिक्षा नहीं मिल रही है, इसलिए भावी पीढी भोगविलासमें इतनी अधिक डूब चुकी है कि वह अपना धर्म ही भूल गई है । धर्म राष्ट्रकी नींव है । धर्म ही डूब गया, तो राष्ट्र नष्ट होनेमें समय नहीं लगेगा । इसीलिए 'दूरदर्शन, मोबाइल और

इंटरनेट उपयोग धर्मकी शिक्षा देनेके लिए कैसे किया जा सकता है' इसकी जानकारी भी इस लघुग्रन्थमें दी गई है । इसका अध्ययन कर, 'भारतकी आध्यात्मिक परम्पराकी रक्षा करना', अभिभावकों और शिक्षकों का धार्मिक कर्तव्य ही है ।

४. बच्चोंके मनपर कुसंस्कार करनेवाले तथा राष्ट्र एवं धर्म की हानि करनेवाले कार्यक्रम प्रसारित करनेवाली दूरदर्शन वाहिनियोंका प्रबोधन करना, इससे लाभ न होनेपर दूरदर्शन वाहिनियोंका बहिष्कार करना, इस प्रकारके प्रयत्न करना, अभिभावकों और शिक्षकों का धार्मिक कर्तव्य ही है । इस विषयमें भी इस लघुग्रन्थमें मार्गदर्शन किया गया है ।

५. समाज जब ईश्वरप्राप्तिके प्रयत्न अर्थात 'साधना' करता है, तभी वह सात्त्विक बनता है । एक बार व्यक्ति सात्त्विक हो जानेपर, वह साधनासे मिलनेवाले आनन्दके कारण रज-तमात्मक बातोंमें पुनः नहीं फंसता । इसके लिए अभिभावकों और शिक्षकों को भी साधना करनी चाहिए । अभिभावक और

शिक्षक, ‘बच्चोंमें साधना करनेके प्रति रुचि क्यों उत्पन्न करें’, यह भी इस लघुग्रन्थमें दिया गया है ।

अभिभावक और शिक्षक केवल यही लघुग्रन्थ पढेंगे, तो उन्हें जानकारी अधूरी लग सकती है; क्योंकि ‘टीवी, मोबाइल और इंटरनेट की हानि से बचकर लाभ उठाएं !’ इस मूल ग्रन्थके सूत्र इस लघुग्रन्थमें नहीं लिए हैं । अतः पूरी जानकारीके हेतु अभिभावक और शिक्षक मूल ग्रन्थ और यह लघुग्रन्थ, दोनों पढें ।

‘यह लघुग्रन्थ पढकर अभिभावक और शिक्षक बच्चोंके प्रति अपना दायित्व एवं कर्तव्य पहचानें तथा भावी पीढीको सब प्रकारसे आदर्श बनानेका प्रयत्न करें’, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !’ – **संकलनकर्ता**

‘धार्मिक कृत्य’ ग्रन्थमालाका एक लघुग्रन्थ

आरती उतारनेकी शास्त्रोक्त पद्धति

अनुक्रमणिका

१. आधुनिक प्रसारमाध्यमोंके कारण वर्तमानमें हुई चिन्ताजनक पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुर्दशा १३
२. अभिभावकों और शिक्षकों में देशकी भावी पीढीका निर्माण करनेकी क्षमता है ! १५
३. अभिभावकवर्गका दायित्व १५
४. शिक्षकबन्धुओंका दायित्व ४५

'सनातन संस्था' स्वभाषाभिमानी है । इसलिए हमने 'स्वभाषारक्षा और भाषाशुद्धि अभियान' नामक ग्रन्थमालाकी रचना की है; तथापि लघुग्रन्थके शीर्षक तथा सार में कुछ अंग्रेजी शब्दोंका प्रयोग हुआ है; क्योंकि वे समाजमें प्रचलित हैं । इन शब्दोंके स्थानपर यदि हिन्दी प्रतिशब्दोंका उपयोग किया गया होता, तो विशेषकर बच्चोंको बहुत कठिन लगता, जिससे वे विषयको समझनेमें रुचि न लेते । अंग्रेजी शब्द रखनेका एकमात्र यही उद्देश्य है; परन्तु आगामी हिन्दू राष्ट्रमें इन अंग्रेजी शब्दोंके स्थानपर, स्वदेशी शब्द ही प्रचलित किए जाएंगे ।